मूल्य 1 रूपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

वर्ष 59 फरवरी, 2014 अंक 2

सभापति का पत्र :

नव वर्ष में कुछ रूचिकर सूचनाएं हैं जो निम्न प्रकार से हैं:

एक वर्ष में पूरे संसार में लगभग 3 करोड़ रूपए अनाज और कृषि विज्ञान पर खर्च किए जाते हैं जिसमें सार्वजनिक और निजी क्षेत्र दोनों का पैसा शामिल है। पिछले वर्ष पूरे संसार में इससे 35 गुना अधिक मिलिट्री और मिलिट्री विज्ञान पर खर्च किया गया, इसमें भी सार्वजनिक और निजी क्षेत्र का पैसा शामिल था। कहने का तात्पर्य है कि एक दूसरे को मारने के लिए 35 गुणा अधिक खर्च किया गया है जबकि अनाज और अन्य कल्याण सुविधाओं पर नहीं।

तेल आपूर्ति की तुलना में 8 गुणा अधिक तेजी से कारों की संख्या बढ़ी है। आधुनिक अनाज प्रकिया प्रमुख रूप से तेल पर ही निर्भर है। प्रत्येक दिन हम अनाज के रूप में लगभग 4 लीटर डीजल तेल खा जाते हैं अर्थात उपयोग करते हैं। कुल मिलाकर विश्व उर्जा उपयोग का 30 प्रतिशत भाग अनाज के खाते में जाता है। इस प्रकार तापमान में वर्ष 2100 तक 2 डिग्री सेल्सियस अधिक गर्मी आ जाएगी। 2 डिग्री के आस–पास के वातावरण में फसलें उगाना अति कठिन हो जाएगा और संसार में अनाज उत्पादन कम होता जाएगा। एक डिर्गी सेल्सियस तापमान बढ़ने से ही आज उत्पादन 10 प्रतिशत तक कम हो जाएगा। अगले 50 वर्षों में हमें उतने अनाज की आवश्यकता होगी जितना हमने कुल पिछले 10,000 वर्षों में खाया है।

वर्ष 2050 तक विश्व के शहरों में 8 बिलियन घर बन जाएंगे और उस स्थिति में चीन के आकार की कृषि भूमि क्षेत्र पर लोगों का कब्जा हो जाएगा। किसानों को बेहतर लाभ देने के लिए अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना होगा जिसके लिए 8 बिलियन शहरी उपभोक्ताओं की आशाओं को पूरा किया जाएगा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमें मीडिया की सहायता की आवश्यकता है किन्तु किसानों को मीडिया से कोई लाभ या मार्ग–दर्शन नहीं मिलता क्योंकि मीडिया समाचार देने में नहीं बल्कि विज्ञापन इक्ट्ठे करने का कारोबार कर रहा है। समाचार पत्रों के पाठक

केवल सस्ती दर पर अनाज के समाचार पढ़ना चाहते हैं। जब तक लोगों को सरकारी आर्थिक सहायता के आधार पर अनाज मिल रहा है तब तक अच्छे अनाज और नई तकनीकी की मांग कम ही रहेगी। किन्तु वास्तविकता यह है कि सरकार लम्बे समय तक सस्ता अनाज देने के लिए सक्षम नहीं होगी।

आधुनिक डाइट के कारण उपभोक्ता भी प्रभावित हैं। 3 में से 2 लोग अपने हाथों ही मर रहे हैं – क्योंकि उनके हाथों में फोर्क (कांटे वाला चम्मच) होता है जैसा लांसिट का कहना है। इनमें से अधिकतम बीमारियों से पीछा छुड़ाया जा सकता है –उपचार से बेहतर परहेज होता है जो एक पौषक डाइट में पाया जाता है। स्वास्थ्य सेवा की कुल लागत का 50 प्रतिशत भाग केवल गम्भीर बीमारियों पर खर्च होता है। 1.4 बिलियन लोग मोटापे से पीड़ित हैं। वर्ष 2030 तक मधुमेह से मरने वालों की संख्या विश्व में 7वीं होगी। इसके पश्चात भी वे छोटे–छोटे किसान कुपोषण से ग्रस्त हैं जो वर्षा आधारित क्षेत्रों में खेती करते हैं। आधुनिक आदतों और खान–पान के कारण विश्व की भूमि, जल, पौष्टिकता, वन जंगलों और किसानों की बर्बादी के जिम्मेवार हैं। यह रिपोर्ट सामने आई है कि हम प्रत्येक वर्ष पूरे विश्व की भूमि का 75 बिलियन टन और कृषि क्षेत्र का 1 प्रतिशत भाग समाप्त कर रहे हैं।

आज पूरे विश्व में केवल 20 बड़ी–बड़ी कम्पनियां ही अनाज के व्यापार पर कब्जा किए हुए हैं। विकासशील देशों के लिए इस प्रमुख समस्या से निपटना और छोटे किसानों को इनसे राहत दिलाना चिंताजनक विषय है।

– अजय वीर जाखड़
अध्यक्ष, भारत कृषक समाज

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

किसान आय आयोग के लिए उत्तम समय

* देविन्द्र शर्मा

एक पत्रकार के रूप में मैं एक बार नोरमन बोरलग से मिला, जिन्होंने मुझे लेच वलेसा, पोलैंड के एक नेता, की एक कहानी सुनाई जो पोलैंड में उस समय भाई–चारे आंदोलन की अगुवाई कर रहे थे। वे पूरे विश्व के समाचार पत्रों में छाए हुए थे क्योंकि उन्होंने श्रमिकों के अधिकार और उनके मुद्दों का प्रश्न उठाया था। नोबल पुरस्कार समिति ने बोरलग की अगुवाई में पोलैंड में एक छोटा दल भेजा यह पता लगाने के लिए क्या वलेसा नोबल पुरस्कार के पात्र हैं ? बोरलग वापस आए और रिपोर्ट दी कि वे देखकर डर गए थे कि वलेसा क्या कर रहे हैं। वे मजदूरों के लिए सस्ता भोजन देने की मांग कर रहे थे लेकिन उन लाखों लोगों की बात नहीं कर रहे थे जो अनाज

का उत्पादन करते हैं। बोरलग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि वलेसा नोबल पुरस्कार के हकदार नहीं हैं। किन्तु वलेसा ने नोबल पुरस्कार तो जीता और मैं चाहता हूं कि वे आज जिंदा होते तो देखते कि भारत में कैसा वाद–विवाद चल रहा है। भारत भी चाहता है कि उसके किसानों का दमन हो क्योंकि वह उपभोक्ताओं को सस्ता अनाज उपलब्ध करना चाहता है और कृषि क्षेत्र को बाजार के अनुकूल बनाना चाहता है।

बाजार अनुकूल कृषि का क्या अर्थ है ? क्या जोखिम में मूल्य/बिकियां करने से बाजार कृषि अनुकूल बन जाता है ? मैं 2 प्रमुख मुद्दों का उत्तर देना चाहता हूं जिन्हें प्रत्येक स्थान पर उठाया जाता है। पहला यह है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य देने से पहल करना रूका, प्रोत्साहन और ठेकेदारी तथा इस प्रकार की अन्य कार्यों में रूकावट आई है। यदि न्यूनतम समर्थन मूल्य नहीं होता तो कई कारपोरेटस कृषि कारोबार में जुट जाते और कृषि कारोबार बढ़ता तथा किसानों को भी आश्चर्यजनक मूल्य मिलते तथा किसान जोखिम उठा सकते थे।

मेरा एक ही प्रश्न है। न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ केवल भारत के 30 किसानों को मिलता है और 70 प्रतिशत भाग न्यूनतम समर्थन मूल्य की पहुंच से अभी भी बाहर हैं। कोई भी सोच सकता है कि 70 प्रतिशत भाग कारपोरेटस के लिए अपना भाग्य आजमाने के लिए पर्याप्त होगा। इस 70 प्रतिशत भाग की स्थिति इतनी अच्छी है कि इसका प्रदर्शन देश में किया जा सकता है कि क्या बिना सरकारी सहायता के किसान जी सकते हैं या नहीं।

वास्तविकता यह है कि किसानों को बहुत कम राज्य सरकारें सहायता उपलब्ध कराती हैं क्योंकि किसान संकट में हैं, वे आत्महत्या कर रहे हैं और वे कृषि का धंधा छोड़ना चाहते हैं। जिस प्रकार भारत में कृषि को समझा जा रहा है ऐसा प्रतीत होता है कि कुछ अत्यधिक गलत हो रहा है। यह सबसे बड़ी समस्या है। देश को वृद्धि दर बढ़ाने की सनक छोड़नी होगी। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कृषि की वृद्धि दर क्या है, क्या यह 2 प्रतिशत या 4 प्रतिशत है। यद्यपि यह 8 प्रतिशत भी हो जाए तो भी किसानों द्वारा आत्महत्या में कमी नहीं आएगी।

वृद्धि दर भी एक महत्वपूर्ण विषय है। यदि देश में सूखा पड़ता है तो उत्पादन उतना ही रहता है जितना पिछले वर्ष हुआ था तो वृद्धि दर वही रहेगी। यदि एक वर्ष छोड़कर प्रत्येक दूसरे वर्ष सूखा पड़ता है तो भी वृद्धि दर बढ़ सकती है। यही तमाशा भारत के कृषि क्षेत्र में हो रहा है और कोई व्यक्ति भी यह प्रयास नहीं कर पा रहा है कि किसानों को मुसीबत से कैसे निकाला जाए या किसानों को इतना निर्भर कैसे बनाया जाए कि वे कार्यकुशलता बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाएं बल्कि अपनी वित्तीय स्थिति में भी सुधार कर सकें। बस यही नहीं हो पा रहा है।

पुनः यहां राष्ट्रीय वाद–विवाद होता है कि अनाज सड़ रहा है, किसान आत्महत्याएं कर रहे हैं, कृषि योग्य भूमि का अधिग्रहण किया जा रहा है और कोई भी यह नहीं जानता कि सरकार या कोई अन्य संस्था किसानों को कैसे बचाएगी और सरकार का विश्वास है कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश से सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। एफडीआई बिचौलियों का हित भी देखेगा, किसानों का हित भी देखेगा उन्हें बेहतर फसल मूल्य देकर, एफडीआई यह भी सुनिश्चित करेगा कि कोई भी किसान आत्महत्या न करे क्योंकि उसे बेहतर मूल्य मिलेगा और उपभोक्ताओं को भी लाभ मिलेगा। यह केवल उस विज्ञापन की तरह है जिसमें एक बच्चा भागता हुआ आता है और कीचड़ में गिर जाता है तथा उसकी माँ उसे उठाते हुए कहती है कि कोई बात नहीं हमारे पास सर्फ एक्सल है ना। एफडीआई भी सर्फ एक्सल की तरह अपना विज्ञापन कर रहा है कि, 'किसानों को लाभ देंगे, सबको लाभ देंगे और आत्महत्याएं भी रूक जाएंगी'।

मैं यह नहीं समझ पा रहा कि विश्व में क्या हो रहा है, इसे कोई क्यों नहीं देख रहा। उदाहरण हेतु अमरीका को लीजिए। वाल्मार्ट ने अमरीका में 50 वर्ष पूरे कर लिए हैं। क्या वाल्मार्ट ने 50 वर्ष में किसानों को बढ़ा हुआ लाभ दिया है ? वहां पर जिंसों के व्यापार के बारे में बातचीत होती है और मूल्य वसूली नामक नए विषय पर भी चर्चा हुई है, जिंसों के व्यापार से अच्छी मूल्य वसूली होती है। अर्थशास्त्री महान होते हैं और उनकी प्रशंसा की जानी चाहिए किंतु उनकी नीतियों से दुविधाएं उत्पन्न होती हैं। मूल्य वसूली से क्या होगा ? जिंसों के व्यापार से मूल्य बढ़ेगा। ठीक है, वाल्मार्ट आएगा तब ही बढ़े हुए मूल्यों का लाभ मिलेगा। लोग इसके बारे में अक्सर सुनते रहते होंगे किन्तु यदि अमरीका के लिए यह सफल है तो अमरीका कृषि को इतनी बड़ी आर्थिक सहायता कैसे दे रहा है ? यदि आर्थिक सहायता वापस ले ली जाए तो अमरीका में कृषि क्षेत्र ठप्प हो जाएगा। यूरोप संघ में कृषि पर से आर्थिक सहायता वापस लेने पर कृषि क्षेत्र वहां भी समाप्त हो जाएगा। यूएनसीटीएडी द्वारा भारत के अध्ययन से पता चलता है कि अमरीका में ग्रीन बाक्स आर्थिक सहायता को वापस लेने से 42 प्रतिशत से 45 प्रतिशत के बीच कृषि क्षेत्र में कमी आ जाएगी।

उत्पादन की भारतीय लागत के बारे में कहा गया है कि विश्व बाजार में यदि भारतीय किसान को टिके रहना है तो उसे उत्पादकता बढ़ानी होगी। यह भी एक भ्रामक बहस है। चावल जो भारतीय उत्पादन में एक महत्वपूर्ण फसल है जिसका उत्पादन प्रति हैक्टेयर 3 टन या 2.8 टन के आसपास है। अमेरिका में यह 7 टन प्रति हैक्टेयर है। बहस का विषय यह है कि जब तक भारतीय किसान उत्पादकता 3 से 7 टन नहीं कर लेता तो वह टिक नहीं सकता। अंत में विश्व बाजार में उसके पास आत्महत्या करने के सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं होगा। अब अमेरिका के किसानों पर विचार करते हैं। क्या वह 7 टन प्रति हैक्टेयर पर बना रह सकता है ? मेरे अध्ययन के अनुसार वर्ष 2005 में अमेरिका का कुल चावल उत्पादन 1.2 बिलियन अमेरिकी डालर था। फिर भी

किसानों को 1.2 बिलियन अमेरिकी डालर की फसल का उत्पादन करने पर 1.4 बिलियन अमेरिकी डालर मिले।

यह केवल चावल के लिए ही लागू नहीं है। कपास के लिए भी ऐसा ही है जो कि एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वर्ष 2005 में मेरे द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार अमेरिका में कपास उत्पादन का मूल्य 3.9 बिलियन अमेरिकी डालर था जिसका उत्पादन 20,000 कपास उत्पादकों ने किया था। विश्व में कपास उत्पादन का सबसे बड़ा भारत क्षेत्र है। हम सदा कहते हैं कि भारतीय किसान है और उन्हें अमेरिका के जितना ही उत्पादन बढ़ाने के पर्यास करने चाहिए। अमेरिका में 20,000 कपास उत्पादक 3.9 बिलियन अमेरिकी डालर का उत्पादन करते हैं और उन्हें इसके उत्पादन हेतु 4.7 बिलियन अमेरिकी डालर की आर्थिक सहायता मिलती है। भारतीय किसान भी उत्पादकता बढ़ा सकते हैं, किन्तु क्या उन्हें इतनी मात्रा में आर्थिक सहायता दी जाएगी ? नहीं। इसका अर्थ है कि या तो वे आत्महत्या करें या खेती करना छोड़ दें। कहानी का यह भाग अनकहा रह जाता है।

ब्राजील ने कपास पर आर्थिक सहायता देने के मुददे पर अमेरिका को विश्व व्यापार संघ के विवाद दल के समक्ष पेश कर दिया। वास्तव में अमेरिका इस मामले में हार गया और उसने किया क्या ? अमेरिका ने ब्राजील को रिश्वत के रूप में 147 मिलियन अमेरिकी डालर की वार्षिक सहायता देना आरम्भ कर दिया ताकि ब्राजील अमेरिका की कृषि या अमेरिका द्वारा दी जाने वाली आर्थिक सहायता के विरूद्ध आवाज न उठाए। यह एक बडा सत्य है जो मैं आपको बताना चाहता था।

आपको समझने की आवश्यकता है कि भारतीय किसान कहां पर है। यूरोप में एक गाय पर भी इतनी आर्थिक सहायता मिल जाती है कि प्रत्येक गाय बिजनेस क्लास में पूरे विश्व का चक्कर लगा सकती है। जब आपको इतनी आर्थिक सहायता दी जाती है तो आप यह भी अपेक्षा करते हैं कि देश में सस्ता दूध भी आए। यही कार्य विदेशी प्रत्यक्ष निवेश करने वाले करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत–यूरोपियन एफटीए पूर्ण रूप से इसी संबंध में है। यूरोप वालो का कहना है कि जब तक शुल्क 60 प्रतिशत से घटा कर 10 प्रतिशत नहीं कर दिया जाता तब तक वे एफटीए के करार पर हस्ताक्षर नहीं करेंगे और भारत भी शुल्क कम करना चाहता है। तो क्या होगा ? भारत में सस्ते दुग्ध उत्पाद और डेरी क्षेत्र आ जाएँगे और इससे कृषि क्षेत्र के अति महत्वपूर्ण भाग होगा भारतीय दुग्ध क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पडेगा। तब हमें यह सुनने को मिलेगा कि भारतीय किसानों को दुग्ध उत्पादन की मात्रा बढानी नहीं आती है।

किन्तु, यह दिखाई देता है कि कृषि क्षेत्र में बहुत से लोग लगे हैं और कृषि को राज्य से सहायता मिलती है। किन्तु बहुत कम राज्य ही कृषि को आर्थिक सहायता देते हैं और जहां राज्य किसानों की सहायता नहीं करते हैं, जहां मण्डियां नहीं हैं वहां किसानों

को संकट का सामना करना पड़ता है। पंजाब – जहां का मैं रहने वाला हूं बहुत सौभाग्यशाली है कि उस राज्य में सुविधाएं उपलब्ध हैं। मुझे एक कहानी याद आ रही है कि स्व. एम.एस. रंधावा ने मुझे लक्ष्मण सिंह गिल के बारे में बताया था जो कुछ समय के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री थे। वे अनपढ़ थे और उन्हें मालूम था कि वे केवल 6 महीने तक रहेंगे। उन्होंने शपथ ग्रहण करने के बाद पहला कार्य किया वे एम.एस. रंधावा से मिले और कहा, 'डा. रंधावा कृपया मुझे बताएं कि मैं ऐसा क्या करूं कि मेरा नाम इतिहास में आ जाए क्योंकि मुझे मालूम है कि मैं केवल 6 महीने तक ही इस पद पर रहूंगा'।

एम.एस. रंधावा ने सुझाव दिया कि पंजाब में कृषि फल फूल रही है और यहां पर मण्डियां और किसान भी बहुत हैं किन्तु उनके बीच कोई सम्पर्क साधन नहीं है और मुख्यमंत्री इसके लिए सम्पर्क सड़के बनवा सकते हैं। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पंजाब में गांव से मण्डियों तक सडक सम्पर्क बनाने की योजना बनाई और प्रत्येक गांव और मण्डियों से सडक सम्पर्क स्थापित हो गए। पंजाब में इस प्रकार का आधाभूत ढांचा तैयार किया गया था और यही कारण है कि आज पंजाब को देश का अनाज का कटोरा कहा जाता है।

यदि आप देश के बाकी हिस्सों में ऐसा नहीं कर पाए तो पंजाब के किसानों को दोष क्यों देते हो ? कोई भी व्यक्ति देश के बाकी हिस्सों में ऐसा क्यों नहीं कर पाता ? यदि हम उत्पादन बढ़ाना चाहते हैं तो हमें पैदावार बढ़ाने या जैविक फसलें उगाने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है आधारभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने की। देश भर में मण्डियां बना दीजिए।

किसानों को एक सुनिश्चित मूल्य दिया जाए तो कोई भी किसान हमारी तरह ही पैदावार बढ़ा सकता है। आपको अपनी निश्चित आय मिलेगी, मासिक आय मिलेगी और वेतन आयोग का लाभ भी मिलेगा जैसा कि हम 7वें वेतन आयोग की बात कर रहे हैं। पेंशन की राशि बढ़ रही है और जहां तक हमारे वेतन का संबंध है हम सभी सुरक्षित हैं किन्तु हम किसानों को बाजार के भरोसे क्यों छोड़ देना चाहते हैं। ये मार्किट फोर्स क्या है ? कृषि मूल्य एवं लागत आयोग के अध्ययन में कहा गया है कि मार्केट फ्रैंडली राज्य वे हैं जिनमें किसानों को कम भुगतान किया जाता है, यह भ्रांति पूर्वक या डर कर कहा गया है।

हमें किस प्रकार की कार्यवाही करनी चाहिए ? विश्व बैंक ने एक समाधान प्रस्तुत किया है। इसने कई वर्ष पहले एक अध्ययन किया था जिसे एक सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया उसमें मैं भी भाग ले रहा था। अध्ययन में कहा गया था कि विकासशील देशों को अपने किसानों को कृषि पर आर्थिक सहायता देने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें ग्रामीण विकास में पैसा लगाना चाहिए और यह पैसा अन्य देशों से भी आ सकता है

न केवल संबंधित देश अकेला इसके लिए पैसा देगा। बैंक ने आगे कहा है कि ग्रामीण विकास के क्षेत्र में दी गई आर्थिक सहायता का अर्थ संसाधनों को बेकार करना है। इसके स्थान पर भारत को अधिक सड़कें बनानी चाहिएं, अधिक बिजली का और इसी प्रकार के अन्य संसाधनों का उत्पादन बढ़ाना चाहिए। मैंने खड़े होकर पूछा कि क्या यह सत्य है, यूरोप के देशों में ग्रामीण आधारभूत सुविधाएं क्यों दी जा रही हैं – बिजली और टेलिफोन लाइनें वहां हैं – कृषि पर आर्थिक सहायता दी जाती है किन्तु इसका मुझे उत्तर मिला कि इस पर लंच के बाद डिसकस करेंगे।

आइऐ हम स्वीकार करें कि कृषि क्षेत्र में आज देश को किस चीज की आवश्यकता है। हम लगभग 24 फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य देते हैं। हम केवल 2 फसलें (मूल रूप से गेहूं और चावल) खरीदते हैं और इन्हीं 2 फसलों के उत्पादन में वृद्धि हुई है और यही फसलें हम वास्तव में हम किसानों से खरीदते हैं। गन्ना और कपास उत्पादकों को भी लाभ होता हैं क्योंकि उनके लिए भी वही पद्धति अपनाई जाती है। किन्तु, अन्य फसलों का उत्पादन नहीं बढ़ा है क्योंकि किसानों को उनकी आवश्यकता के अनुसार इन फसलों का मूल्य सुनिश्चित नहीं हो पाता है।

इस प्रकार किसान जोखिम क्यों उठाएं ? किसान इतनी हानि क्यों उठाएं कि उन्हें अपनी टमाटर की फसल को एक वर्ष सड़कों पर फेंकना पड़े और अगले वर्ष आलू को सड़कों पर फेंकना पड़े ? भारत में यही हो रहा है। हम यह सुनिश्चित क्यों नहीं का पाते कि किसान जोखिम न उठाए और उन्हें एक निश्चित आय का भुगतान किया जाए ? अब यह प्रश्न बहुत बड़ा बन चुका है। यदि किसान अच्छा कर रहे हैं और कहें कि 70 प्रतिशत तक परिणाम प्राप्त कर रहे हैं जो कि न्यूनतम समर्थन मूल्य हित के क्षेत्राधिकार से बाहर है, तो भी किसानों की आय बढ़नी चाहिए।

यदि 11 लाख करोड़ रू० भारतीय किसानों को दिए गए होते तो उनकी आय बढ़ती और जब किसानों की आय बढ़ती है तो पूरी अर्थव्यवस्था को लाभ मिलता है। कृषि क्षेत्र को पुनः सुधार (रिवाईव) करने की आवश्यकता है। सुधारों का अर्थ निजिकरण नहीं होना चाहिए। हमें सुधार आरम्भ करते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि किसानों के कल्याण पर विशेष ध्यान दिया जाए। देश में इसी की आवश्यकता है। जब तक हम ये सुधार नहीं करते, तब तक हमें बीतने वाले प्रत्येक वर्ष में और आत्महत्याओं का समाचार सुनने के लिए तैयार रहना होगा।

दुर्भाग्यवश भारत की किसानों की संस्थाएं भी इस प्रश्न को नहीं उठा रही हैं कि न्यूनतम समर्थन मूल्य का युग समाप्त होने के बाद किसानों का क्या होगा। ये संस्थाएं अभी भी न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने की बात करती हैं और यह महसूस नहीं कर रही कि किसानों के कई वर्ग ऐसे हैं जिन्हें न्यूनतम समर्थन मूल्य का लाभ नहीं मिलता है और न ही उन्हें निजी क्षेत्र में शामिल करने के बाद लाभ मिलता है और उनके माल

RNI No. 831/1957
पोस्टल रजि० DL (S)-01/3092/2012-14
पहले भुगतान किये बिना पोस्ट करने का लाइसेंस नं० U(C)-92/2012-14

प्रकाशन की तिथि : 1 फरवरी, 2014
नई दिल्ली पी.एस.ओ, नई दिल्ली-1
तारीख 4 एवं 5, फरवरी 2014

का बड़ी–बड़ी मण्डियों में भी अच्छा मूल्य नहीं मिल पाता जैसा हम बात करते हैं कि ई–चौपाल में अच्छा मूल्य मिलता है। आईटीसी द्वारा स्थापित ई–चौपाल के बारे में बड़ी–बड़ी बातें कही गई थीं। अब कृषि क्षेत्र के लिए ई–चौपाल क्या कर रही हैं ? आगे भी यही सब होता रहेगा और हमारे पास बड़ी–बड़ी मण्डियां तो होंगी क्योंकि हम इन मण्डियों को बडे–बडे रिटेल के साथ सम्मिलित करना चाहते हैं और वे अपना उत्पादन प्रकियाएं आरंभ करेंगी। इनसे उन्हें तो निश्चित लाभ मिलेगा किन्तु भारतीय किसानों को नहीं।

अन्त में वास्तविक स्थिति पर विचार करने के लिए वर्ष 1996 में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि और अनुसंधान पर परामर्श समूह, यह निकाय 16 अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्रों का नियंत्रण करती है के तत्कालिक अध्यक्ष इस्माईल सेरागेल्डिन ने स्वामीनाथन प्रतिष्ठान में एक प्रस्तुति के दौरान कहा कि विश्व बैंक का अनुमान है कि वर्ष 2015 तक भारत में ग्रामीण क्षेत्र से नगरों में इंग्लैंड, फ्रांस और जर्मनी की पूरी जनसंख्या मिलाकर इससे दुगनी संख्या में स्थानान्तरित हो जाएंगे अर्थात् लगभग 200 मिलियन लोग।

हमें सम्पूर्ण रूप में कृषि और ग्रामीण विकास पर ध्यान देना होगा और यह सुनिश्चित करना होगा कि देश की पूरी जनसंख्या के लिए केवल अपनी मूल भूत आवश्यकताएं पूरी करना ही पर्याप्त नहीं है। पूरे विश्व में अनाज की कमी है और यदि भारत ने भी अनाज का उत्पादन बन्द कर दिया तो यह पूरे विश्व के लिए अति संवेदनशील स्थिति हो जाएगी, उससे भी बद्तर जब वर्ष 2007 में बहुत से देशों में अनाज की संकट उत्पन्न हो गया था और 37 देशों में खाने के लिए दंगे हुए थे सिर्फ इस कारण कि वे विश्व के कृषि कार्यक्रम से अलग हुए थे। आइए हम वही गलती न दोहराएं।

हमें कृषि की रक्षा करनी चाहिए और अपने किसानों के हितों को बचाने में शर्म नहीं करनी चाहिए बल्कि उनके हाथों में अधिक शक्ति देने का प्रयास करना चाहिए और उनकी जेबों में अधिक पैसा पहुंचाने के उपाय करने चाहिए।

* खाद्य नीति विश्लेषक और एक्टिविस्ट

O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O-O

भारत कृषक समाज ए–1, निजामुद्दीन वेस्ट, नई दिल्ली– 110013, फोनः 011–24359509, 65650384, ई–मेलः contact@bks.org.in, वैबसाईटः www.farmersforum.in के लिए श्री उरविन्द्र सिंह भाटिया द्वारा सम्पादित, मुद्रित व प्रकाशित तथा एवरेस्ट प्रेस, ई 49/8 ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया, फेस –2, नई दिल्ली –110020 द्वारा मुद्रित।